Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –10, Nov.2011
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

मैला आंचल उपन्यास में

राजनैतिक, आर्थिक परीवर्तन-सामाजिक संबंध और भाषा का विवेचन

कल्पना मा. व्हसाले

हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वा.रा.ती. महाविद्यालय,

अंबाजोगाई जि. बीड

प्रास्ताविक-

आजकल जिसप्रकार सामाजिक चेतना निर्माण हो रही है। उसी प्रकार राजनैतिक चेतनाभी विकसित हो रही है। राजनीति का मूल अर्थ व्यक्ति अधिकारों की सुरक्षा, स्वच्छप्रशासन, समाज में किसी भी कारण से बढनेवाली असमानता का नाश करना है। गुटबाजी और षडयन्त्रसे भरपूर राजनीति का अर्थ राजनीति नही है। स्वच्छ राजनीति शोषण का विरोध करती है तथा शोषितो को साथ लेकर अन्याय और असमानता का विरोध करके जनताको उनके अधिकारों के प्रति जागृत किया जाता है। 'मैला आंचल' में यही परिवर्तीत राजनीति दिखाई देती है। उपन्यास में एक ओर तथा कथित समाजसेवी राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट चरित्रों का पर्दाफाश करने का उद्देश्य है तो दुसरी ओर शोषित जनता की पक्षधरता की अभिव्यक्ति मिलती है। साथ ही गांधीवादी आदर्शकी स्थापना भी की गयी है। भ्रष्ट राजनीति के अन्तर्गत बलदेव जैसे कांग्रेसी समाज सेवियों के चरित्र का पर्दाफाश हुआ है। वास्तव में यह बलदेव उन असंख्य बलदेवों का प्रतीक है जो आज भी गांधीजी की पूंछ को पकडकर अपनी स्वार्थ की पूर्ति मे लगे है। समाजसेवा और देशभक्ति के नामपर राष्ट्र की आशिक्षित , संस्कारी और भोली भाली जनता का शोषन कर रहे है। राजनीति का यह भ्रष्ट और कुंठिलरुप लेखक के व्दारा इसलिए प्रस्तूत किया गया है कि वह यह स्पष्ट कर सकें कि जनता अब बालदेव जैसे ढोंगी नेताओं को पहचान रही है। और इनके व्दारा गरिब जनता की आँखों मे धूल झोंकनेका जो कार्य हो रहा है वह अब सफलता प्राप्त नही कर पायेगा। आज गांधीवादी दृष्टिकोणसे अधिक समाजवादी दृष्टिकोण ने आज किसानों और मजदुरों को आकर्षित किया है। इसलिए समाजवादी कालीचरण को शोषित संथाल अधिक मानते है। इसीलिए सभास्थलपर ही इस पक्ष रु ३०० मेंबर बन जाते है। एक भी संथाल ऐसा नही जो सभासद नही हुआ। दुसरी तरफ जब बालदेव सभामें बोलने के लिए खडा होता है तो सोशलीस्ट वासुदेव उसे बोलनेसे रोकते हुए कहता है हम आपको जानते है आप पूंजीवादी है। इस सभा में आप नही बोल सकतें। वासुदेव ही नही अन्य सामान्य जनता भी इनके ढोंगी वृति को जान रही है, इसीलिए सभा में हल्ला मचाते हुए लोग कहते है, "जाइए जाइए - कपडा की पूर्जी बाँटिए, चिनी निती बिलेक कीजिए"

आर्थात जनता भी सब इस बात को जानती है कि जनता की सहायता और समाजसेवा की आडमें ये अवसरवादी टटपूँजिए नेता मात्र अपना स्वार्थ साधने की तरकीबे लडाते रहते है। प्रगति के राह की सबसे बडी मुसीबत यही लोग है।

राजनैतिक परिवर्तन के अन्तर्गत "मैला आंचल में " एक अन्य पक्ष स्पष्ट हुआ है। यह पक्ष समाजवादी पार्टी के कालीचरण और उनके साथीयों व्दारा प्रस्तूत हुआ है। सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं में शोषित जनता का पक्षधरता का भाव है। कालीचरण सामान्य लोगों के सुख दु:ख की बात करता है। वह उनसे छीने उनके अधिकारों को वापिस दिलानेकी बात करता है। शोषण और भ्रष्टाचार के विरुध्द आम जनता में आक्रोश निर्माण करना चाहता है। सदियों से सतायें गये लोगों को इसीलिए कालीचरण की बातें अच्छि लगती है। कालीचरण बातों के साथ व्यवहार में भी शोषितों का हितचिंतक है। इसीलिए जब गाँव में हैजा फैल जाता है तो दवा तथा टिकीयों लगानेका का काम वह स्वयं करता है। दस्तभरे बिछावनेपर सोये रोगीयों की सेवा करता है। किसानों को ललकारते हुए कहता है। धरती के सच्चे मालिकों उठों ! क्रान्ति की मसाल लेकर आगे बढो।

अर्थात अब आम लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागृति निर्माण हो रही है। वे समझ रहे है कौन उनके हितचिन्तक है और कौन लूटेरे। संथालों व्दारा भूमि के लिए किया गया सघंर्ष विशेष महत्व रखता है। सदियों से शोषित किसान -वर्ग-सामूहिकरुपसे शोषक वर्ग के खिलाफ खडा होकर अपनी जमीन प्राप्त करने के लिए सिधे संघर्ष के लिए खडे हो गये है। यह उनमें उत्पन्न जागृती के शिवाय और क्या है इस संघर्ष में में उन्हे कितना न्याय मिलता है यह बात महत्व पूर्ण नही महत्वपूर्ण तो यह है की वे अपने अधिकारों की माँग करना सीख रहे है। इन्हें केवल मार्गदर्शन की आवश्यकता थी और वह कालीचरण और उनके साथीयों के व्दारा मिला परिणाम स्वरुप तहसीलदार बाबू विश्वनाथ मल्लिक का ह्दय परीवर्तन हो जाता है अर्थात लेखक पाठकों को यह बताना चाहते है की इनमें मानवीयता जाग रही है। सुमरित दाससे कहते है, "सुमरित दास लोगों से कह दो ...." हर एक परिवार को पाँच बीघा के दर से मै जमीन लौटा रहा हूँ। और संथाल टोली में जाकर कहो वे लोग भी आकर रसीद लें जायें। एक पैसा सलामी या नजराना कुछ भी नही।

कुछ समयपूर्व जमीदारने संथालों को कामपर लगाकर जंगलो को मोती का दाना उगलनेवाली जमीन के रुप में तबदील किया था और इसीसे मेरीगंज आबाद हुआ था। लेकीन संथालों का इसपर कोई हक नही था यहा तक की जहाँ इनके झोपडे बनेथे वहाँपर भी इनका कोई अधिकार नही था।

लेकिन अब परिवर्तन हो रहा है। बहूत दिनोंतक जिस जमीनपर किसान खेती कर रहा है अस जमीनसे उसे बेदखल नही किया जा सकता। कुछ समाज सेवियों ने इन लोगों के लिए काम किया है। जिसमें विश्वनाथ मल्लिक डॉ. प्रशांत, बावनदास आदि है। डॉ. प्रशांत का संपूर्ण कार्य मानवीयता मे उच्च आदर्श से प्रेरित है। वह वहाँ की शोषित, अभावग्रस्त, भोली, अंधविश्वासी जनता के प्रति अत्यन्त संवेदनशील है और अपने विचारों के विभिन्न स्तरों व्दारा यहाँ के दु:खी मानव समाज की हित साधना में अपने संपूर्ण जीवन को मिटा डालते है।

मैला आंचल के अन्तर्गत राजनैतिक, सामाजिक परिवर्तन का जो स्वरुप स्पष्ट हुआ है वह व्यक्तिचरित्रों को भी उभारता है और परिवेश की पूष्टी प्रस्तूत करता है।

सामाजिक सम्बन्ध

मेरिगंज गाँव कै यौन संबंधों को लेकर लेखक किसी रुमानी प्यार को प्रस्तूत करना नही चाहते बल्कि उसके माध्यमसे भोगीगई सामाजिक विसंगतीयों को व्यंग्य दृष्टिसे प्रस्तूत करना चाहते है। और इस विसंगतीयों के मूल कारणों की और हमे आकृष्ट करना चाहते है। मेरिगंज में हर तरफ अनैतिक यौन संबंध प्रस्थापित है। माँ -बाप को अपनी बेटीका अनैतिक संबंध मालूम है फिर भी वे मौन है। किन्तू पडोसी रामनुदास की पत्नी को यह बात अच्छी नही लगती फूलीया और खलासीसे की हर बात का उसे पता है। स्वंय फुलियाही उसे बताती है कि कलकलों को कुछ हो गया तो चमारिन की भी खूशामदें करनी पडेगी किन्तू माँ बाप आर्थीक स्थितियों के कारण इ स गन्दे यथार्थ को भी स्वीकार रहे है। रामनूदास की पत्नी फूलीया की माँ से इतना भी कहती है. "तुम लोगों को न तो लाज है न शरम। कब तक बेटि की कमाईपर लाल किनारी वाली साडी चमकाओगी ? आख्रीर एक हद होती है किसी बात की मानती हूँ की जवान विधवा बेटी दुधारुगाय के समान होती है किन्तू इतना अधिक दूध न निकालो की वह शरीरसे सुख्र जाए।" यहाँ धिक्कार तो है किन्तू दुसरी तरफ यह भी सच है कि न चाहते हूए भी इस स्थिति को स्वीकारना पडता है। सहदेव मिसिर भी अपने अनैतिक व्यवहार के कारण तंगिमा टोली में रात भर अटक कर रह जाते है। मेरीगंज का मठ तो अनैतिकता का अड्डा ही है। मठ की काढारिन लक्ष्मी वर एकनही तीन-तीन महंत लट्टु है। लगता है सारे गाँव की सामाजिक जीवन में नैतिकता की अवधारणा टुट रही है। कही मजबुरण कही किन्ही और कारणोंसे अनैतिक मौन संबंध बने है। नारवे के स्त्री का रामलगन के बेटे से, उचितदास की बेटी का कोयरी टोली के सरन महतो से तहसीलदार हरगौरी का अपनी मौसेरी बहनसे, तो नेता कालीचरण का चर्ख्रा स्कूल की मास्टरानी से अवैध संबंध है। समाज की अनैतिकताजन्य मैली स्थिती को यह संबंध साक्षात कर देते है।

आर्थीक -

मेरीगंज गाँव की आर्थीक स्थिति बिमार है। इस बीमार आर्थीक जिंदगी के दो कारण है, बेकारी और गरीबी जिनके कारण संपूर्ण गाँव विभिन्न जडताओं एवं अभावों का भयानक शिकार है। वस्त्रों के अभाव में यहाँ निमोनिया के रोगी पुआल में शिर छिपाते हैं छाती के पर कफ की भीषण जकडन लिए जिंदगीसे झुझते है, सिसकते है और तिल-तिल गलकर खत्म हो जाते है। चारों ओर भूख्र और मजबुरीसे लोंग छटपटा रहे है। जमीनदार जैसे जोंक इनका निरन्तर शोषण करते आ रहे है। इनको इन्होने इतना मजबुर बना दिया है कि यहाँ के लोग आम की गुठलियों के सुख्रे गुदे की रोटी पर जिन्दा है। यह गरीबी बेकारीसे ही उपजी हुई है। जिसके कारण मजबुर गरीब रोता सिसकता तो है हि किन्तू उसमें एक चेतना भी उपज चुकी है। इसीलिए रामकिरपाल सिंह का हलवाह मजदूरी की मांग स्पष्ट करता है। चर्ख्रा सेन्टर के रुप में लघूउद्योग और एक जूट मिल खूलने का समाचार गाँव की आर्थिक विसंगतियों की ओर एक राहतवाला कदम दिख्रलाई पडता है, लेकीन राजनीति उसे भी ग्रस लेती है। गाँव में भूमि के लिए जमीदारों और संथालो का संघर्ष मुख्य संघर्ष है। लेख्रक इस संघर्ष में विविध प्रकार से अपनी मानसिकता में डाक्टर प्रशान्त के रुप में उनके साथ दिख्राई देता है। संथालों का संघर्ष में हारना तो जमीनदारी तिकडमो का यथार्थ परिणाम हो सकता है लेकिन जिस प्रकार लेख्रकने तहसीलदार के मन में हीन प्रवृत्ति को उपजाकर आर्थीक समस्या का हल दिया है वह बहूत कुछ सपाट और आदर्शात्मक है।

मैला आंचल की भाषा

इसी उपन्यास के साथ ही भाषा संबंधी आक्षपों का जन्म हुआ। मेरीगंज के ग्रामीण यथार्थ को अभिव्यक्त करने में लेख्रक सर्जनात्मक अनिवार्यता की लक्ष्मण रेख्रा को लांघ चमत्कारीक प्रदर्शन प्रवृत्ति तक पहूँच गये है। शब्दों की तोड मरोंड में स्वाभाविकता का परिणाम अनुपातिक दृष्टि से काफी कम रह गया है, जैसे

- 'पण्डित' के लिए चन्नित 'पेट्रोमेक्स' के लिए पंचलैट, ड्राइवर के लिए 'डलेभर', 'थियेटर' के लिए ढेढर, मूवमेंट के लिए मोमेंट वाइस चेअरमैन के लिए भैंसचेअरमन, हाईकोर्ट के लिए हैकोट, इनकलाब जिन्दाबाद के लिए इनिकलास जिन्दाबाद आदि । वस्तूस्थिति ऐसी है कि पहले तो इतने अंग्रेजी शब्द ग्रामीण जीवन मे है नही और उसका यह देशजरुप बहूत कुछ रेनू की अपने मस्तिष्क की उपज है । संपूर्ण उपन्यास में बंगला भोजपूरी बहूल और अंग्रेजी शब्द संपदा का प्रयोग पाठकको खलता है । रेणू जी के युग्मशब्द बडें स्वाभाविक बन पडे है जो बातचीत को जीवनसे जोडते है जैसे - खर -खजाना, पर पंचायत, जर जमीन आदि । लेखकने वर्णनात्मक विवेचनात्मक, सांकेतिक सुक्ष्म एवं व्यंगात्मक आदि विविध शैलियों का अभिनव मिश्रित प्रयोग किया है । कई कई प्रसंगोका पारस्परिक एवं एकसाथ संग्रंथक लेखककी शैली विषयक जागरुकता और गतिशीलता का परिचय देता है । गाँव की दो स्त्रियों की पारस्पारिक लडाई में प्रयुक्त भाषा का एक रुप रे सिंघवा की रखेला ! सिंघवा के बजान का बम्बें आम का स्वाद भूल गई । तडबन्ना में रात रात भर लूकांचोरी में ही खेलती थी रे ? कुरअंखा को बच्चा जब हुआ था तो कुरअंखा सिंघवा से मुंह देखौगी में बाछी मिली थी, सो कौन नही जानता । गवई औरतों की लडाई का चित्र तो इसमें है ही, इस की व्यांग्यांत्मक वृत्ति प्रमुख है । एक औरत दुसरी से बदला लेने, वाक्य बान चुभाने मे कोई कसर बाकी नही रखती । तरबन्ता, बम्बै, लूकाचोरी, कुरअँखा, मुंह देखौनी आदि शब्द बिहार के लोकजीवन के शब्द है, जो इस बात के साक्षी है कि किस प्रकार सारे उपन्यास में स्थानीय बोली, उपबोलियों के शब्दों का सर्जनात्मक प्रयोंग हुआ है ।

मेला आंचल में ध्वनियों, प्रतीको, बिम्बो, विविध रंगो का संयोजन बडे ही कलात्मक ढंग से हुआ है । कही कही यह इतने अधिक हो गये है कि आश्चर्य का अनुभव होने लगता है । खंनडी की झमझम ढोलक का ढाक ढिण्ना, अखाडे के आ आ अली, नन्हें कमल के ऐ है ऐ है आ आ बेलगाडी की कट कर्रकट, घोंडे की हि हि हि हि हि आदि छोटी छोटी ध्वनिय भी लेखकने सुनी है तभी तो गाँव के विविध संदर्भो मे ये ध्वनियाँ उजागर हुई है । लक्ष्मीसागर वाष्णेय कहते है "रेणू के पास तो ध्वनियंत्र है, जिनके माध्यमसे उन्होंने इस अंचल की आवाजे, हंसुलियों ओर झांझरों के बजने, कंगनों की खनक तक मुर्त कर दी है" गुल मोहर के लाल लाल फुलों का बुझना, अमलतास की पीली ओढनी का नजाने कब सरक जाना, कफन जैसे सफेद बालू भरे मैदान में धानी रंग की बेल का उभरना, उत्साह का स्पिरीट की तरह उड जाना प्यार की खेती करना, आँसू से भीगी धरती पर प्यार के पौधो का लहलहाना आदि असंख्य प्रयोग है जो कही बिम्ब बनाते है, कही रंगभरते है, तो कही पारस्पारिक रचावमें संवेदनाओं की सधन बुनावट का रुपागित करते है । तीक्ष्ण वस्तू, भूखी दृष्टि होने के कारन उनकी लेखनी की धारपर एक एक चित्र साकार हो उठता है । काव्यात्मक अभिव्यक्ति का एक उदाहरण है जिसके माध्यमसे डाक्टर प्रशान्त की मन:स्थिति का ब्यौरा मिलता है, वेदान्त भोतीकवाद, सापेक्षवाद, मानवतावाद । हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है, व्याध के तीर से जख्मी हिरण शावक सी मानवता को पनाह कहाँ मिले ..... हा हा हा? यह हासा व्याधों के अटहास से आकाश हिल रहा है । छोटा सा नन्हा सा हिरण हाफ रहा है । छोटे फेफडे की तेज धुक-धुकी । .... नीलोत्पज नही ! यह अंधेरा नही रहेगा । मानवता के पूजारियों की वाणी गूँजती है पवित्र वाणी । उन्हें प्रकाश मिल गया है । तेजोमय क्षतविक्षत पृथ्वी के घावपर शीतल चंदनलेप रहा है । हिसा से जर्जर प्रकृति का रौना, व्याध के तीरसे हिरण शावक सी मानवता को पनाह न मिलना व्याध के अट्टहास से आकाश का हिलना, नन्हे से हिरण का हाँफना और उसकी तेज धुकधुकी चलना, अँधेरे का मिटना, मानवता की राह का मिलना, तथा पृथ्वी के घांवपर चंदन का लेप करना आदि ऐसे उत्स है, जिन्होने उस संश्लिष्ट चित्र में मानवता का गहरा रुप उजागर किया है ।

अत: रेणू का एक एक शब्द प्रयोग ठहराव, चाहता है ताकी ध्वनियों, बिम्बों, प्रतीकों, वक्रताओं एवं नाटकीय छवियों कू छवियों आदि का रचाव अपनी नयी-नयी प्रभाव भंगिमाये बनाये । मैला आंचल की भाषा में आंचलकता का गहरा हल्का स्पर्श, काव्यत्व और भावतत्व की सहज संवेदना और साथ ही विवेचनायुक्त

भाषा का सफल निर्वाह हुआ है। इसमें कथ्य का वैशिष्टय तो है ही, साथ ही भाषा के स्तर पर भी यह पाठकों को बांधकर रखता है। और प्रभावित करते चला जाता है। भाषा के स्तरपर आंचलीक प्रयोंगों को प्रस्तूत करता है। इसके बावजूद आंचलिकता का अत्याधीक प्रयोग होने के कारण पाठकको यह विशिष्टता खटकती है। क्यों कि कई़बार भाषा की जानकारी न होने के कारण लेखक के व्दारा प्रस्तूत होनेवाला अर्थ पाठक नही समझ पाता, और कथा की निरन्तरता टुट जाती है। इसके बावजूद मैला आंचल का भाषावैविध्य उसका गुणात्मक वैशिष्टय है। इसे हम भूल नही सकते।

संदर्भ ग्रंथ

१) भारतीय साहित्य / डॉ लक्ष्मीलाल पाण्डेय

२) हिन्दी उपन्यास का विकास / डॉ. सुरेश मिश्र
३) आधूनिक हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थीक चेतना / पीताम्बर सरोदे